तित्थयर

वर्ष २२ अंक-१० जनवरी १९९९

जैन भवन

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - १०, जनवरी १९९९

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन धर्म का प्राचीन इतिहास	डा° हीरालाल जैन	२२९
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	२३५
३.	राजा सम्प्रति		२४७

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तियाँ एवं मन्दिर ।

Composed by

COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

संबुज्झमाणे उ नरे मईमं,
पावाउ अप्पाणं निवट्टएज्जा ।
हिंसप्पसूयाइं दुहाइं मत्ता,
वेरानुबन्धीणि महब्भयाणि ॥

— (सूत्र० श्रु० १ अ० १० गा० २१)

सम्यक् बोध को जिसने प्राप्त कर लिया वह बुद्धिमान् मनुष्य हिंसा से उत्पन्न होनेवाले वैर-वर्द्धक एवं महा भयंकर दुःखों को जानकर अपने को पाप-कर्म से बचाये ।

जैन धर्म का प्राचीन इतिहास

डा हीरालाल जैन

अन्य राजवंश–

उक्त राजवंशों के अतिरिक्त दक्षिण के अनेक छोटे-मोटे राजघरानों द्वारा भी जैन धर्म को खुब बल मिला। उदाहरणार्थ, कर्नाटक के तीर्थहल्लि तालुका व उसके आसपास के प्रदेश पर राज्य करनेवाले सान्तर नरेशों ने प्रारम्भ से ही जैन धर्म को खूब अपनाया। भुजबल सान्तर ने अपनी राजधानी पोम्बुर्चा में एक जैन मन्दिर बनवाया व अपने गुरू कनकनंदिदेव को उस मन्दिर के संरक्षणार्थ एक ग्राम का दान दिया। वीर सान्तर के मंत्री नगुलरस को ई॰ सन् १०८१ के एक शिलालेख में जैन धर्म का गढ़ कहा गया है। स्वयं वीर सान्तर को एक लेख में जिनभगवान के चरणों का भृंग कहा गया है। तेरहवीं शताब्दी में सान्तरनरेशों के वीरशैव धर्म स्वीकार कर लेने पर उनके राज्य में जैन धर्म की प्रगति व प्रभाव कुछ कम अवश्य हो गया, तथापि सान्त' वंशी नरेश शैवधर्मावलम्बि होते हुए भी जैन धर्म के प्रति श्रद्धालु और दानशील बने रहे। उसी प्रकार मैसूर प्रदेशान्तर्गत कुर्ग व उसके आसपास राज्य ग्नेवाले कांगल्व नरेशों ने ग्यारहवीं व बारहवीं शताब्दियों में अनेक जैन मन्दिर बनवाये और उन्हें दान दिए। चांगल्व नरेश शैवधर्मावलम्बि होते हुए भी जैन धर्म के बड़े उपकारी थे, यह उनके कुछ शिलालेखों से सिद्ध होता है जिनमें उनके द्वारा जैन मन्दिर बनवाने व दान देने के उल्लेख मिलते हैं। इन राजाओं के अतिरिक्त अनेक ऐसे वैयक्तिक सामन्तों, मंत्रियों, सेनापतियों तथा सेठ साहूकारों के नाम शिलालेखों में मिलते है, जिन्होंने नाना स्थानों पर जिन मन्दिर बनवाये, जैन मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराई, पूजा अर्चना की; तथा धर्म की बहुविध प्रभावना के लिए विविध प्रकार के दान दिए। इतना ही नहीं, किन्तु उन्होंने अपने जीवन के अन्त में वैराग्य धारण कर जैनविधि से समाधिमरण किया। दक्षिण प्रदेश भर में जो आजतक भी अनेक जैन मन्दिर व मूर्तियाँ अथवा उनके ध्वंसावशेष बिखरे पड़े हैं, उनसे भले प्रकार सिद्ध होता है कि यह धर्म वहां कितना सुप्रचलित और लोकप्रिय रहा, एवं राजगृहों से लगाकर जनसाधारण तक

के गृहों में प्रविष्ट हो, उनके जीवन को नैतिक, दानशील तथा लोकोपकारोन्मुख बनाता रहा ।

गुजरात-काटियावाड़ में जैन धर्म–

ई० सन् की प्रथम शताब्दी के लगभग काठियावाड़ में भी एक जैन केन्द्र सुप्रतिष्ठित हुआ पाया जाता है। षट्खंडागम सूत्रों की रचना का जो इतिहास उसके टीकाकर वीरसेनाचार्य ने दिया है, उसके अनुसार वीर निर्वाण से ६८३ वर्ष की श्रुतज्ञानी आचार्यों की अविच्छिन्न परम्परा के कुछ काल पश्चात् धरसेनाचार्य हुए, जो गिरिनगर (गिरिनार, काठियाबाड़) की चन्द्रगुफा में रहते थे । वहीं उन्होंने पुष्पदंत और भूतवलि नामक आचार्यो को बुलवाकर उन्हें वह ज्ञान प्रदान किया, जिसके आधार पर उन्होंने पश्चात् द्रविड़ देश में जाकर षट्खंडागम की सूत्र-रूप रचना की । जूनागढ़ के समीप अत्यन्त प्राचीन कुछ गुफाओं का पता चला है जो अब बाबा-प्यारा का मठ कहलाती हैं । उनके समीप की एक गुफा में दो खंडित शिलालेख भी मिले हैं जो उनमें निर्दिष्ट क्षत्रपवंशी राजाओं के नामों के आधार से तथा अपनी लिपि पर से ई० सन् की प्रारम्भिक शताब्दियों के सिद्ध होते हैं । मैंने अपने एक लेख में यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि सम्भवतः यही गुफा धरसेनाचार्य की निवासभूमि थी और सम्भवतः वही उनका समाधिमरण हुआ, जिसकी ही स्मृति में वह लेख लिखा गया हो तो आश्चर्य नही । लेख जयदामन् के पौत्र रूद्रसिंह (प्र०) का प्रतीत होता है । खंडित होने से लेख का पूरा अर्थ तो नहीं लगाया जा सकता, तथापि उसमें जो केवलज्ञान, जरामरण से मुक्ति आदि शब्द स्पष्ट पढ़े जाते हैं, उनसे उसका किसी महान् जैनाचार्य की तपस्या व समाधिमरण से संबंध स्पष्ट है । उस गुफा में अंकित स्वस्तिक, भद्रासन, मीनयुगल आदि चिह्न भी उसके जैनत्व को सिद्ध करते हैं । ढंक नामक स्थान की गुफाएँ और उनमें की ऋषभ, पार्श्व, महावीर व अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएं भी उसी काल की प्रतीत होती हैं । गिरनार में धरसेनाचार्य का उपदेश ग्रहण कर पुष्पदंत और भूतबलि आचार्यो के द्रविड़ देश को जाने और वही आगम की सूत्र-रूप रचना करने के वृतान्त से यह भी सिद्ध होता है कि उक्त काल में काठियाबाड़–गुजरात से लेकर सुदूर तामिल प्रदेश तक जैन मुनियों का निर्बाध गमनागमन हुआ करता था ।

आगामी शताब्दियों में गुजरात में जैन धर्म का उत्तरोत्तर प्रभाव बढ़ता हुआ पाया जाता है । यहाँ वीर निर्वाण के ९८० वर्ष पश्चात् बलभीनगर

में क्षमाश्रमण देवर्द्धिगणि की अध्यक्षता में जैन मुनियों का एक विशाल सम्मेलन हुआ जिसमें जैन आगम के अंगोपांग आदि वे ४५-५० ग्रंथ संकलित किए गए जो श्वेताम्बर परम्परा में सर्वोपरि प्रमाणभूत माने जाते हैं, और जो अर्द्धमागधी प्राकृत की अद्वितीय उपलभ्य रचनाएं हैं। सातवीं शती के दो गुर्जरनरेशों, जयभट (प्र°) और दड्ड (द्वि°) के दान पत्रों में जो उनकी वीतराग और प्रशान्तराग विशेषता पायी जाती हैं, वे उनके जैन धर्मावलम्बित्व को नहीं तो जैनानुराग को अवश्य प्रकट करते हैं। इस प्रदेश के चावड़ा (चापोत्कट) राजवंश के संस्थापक वनराज के जैन धर्म के साथ सम्बन्ध और उसके विशेष प्रोत्साहन के प्रमाण मिलते हैं। इस वंश के प्रतापी नरेश मूलराज ने अपनी राजधानी अनहिलवाड़ा में मूलवसतिका नामक जैन मन्दिर बनवाया, जो अब भी विद्यमान है। श्रीचन्द्र कवि ने अपनी कथाकोष नामक अपभ्रंश रचना की प्रशस्ति में कहा है कि मूलराज का धर्मस्थानीय गोष्ठिक प्राग्वाटवंशी सज्जन नामक विद्वान् था, और उसी के पुत्र कृष्ण के कुटुंब के धर्मोपदेश निमित्त कुंदकुंदान्वयी मुनि सहस्रकीर्ति के शिष्य श्रीचन्द्र ने उक्त ग्रंथ लिखा। मुनि सहस्रकीर्ति के संबंध में यह भी कहा गया है कि उनके चरणों की वंदना गांगेय, भोजदेव आदि नरेश करते थे। अनुमानतः गांगेय से चेदि के कलचुरि नरेश का, तथा भोजदेव से उस नाम के परमारवंशी मालवा के राजा से अभिप्राय है। उद्योतनसूरिकृत कुवलयमाला (ई° सं° ७७८) के अनुसार गुप्तवंशी आचार्य हरिगुप्त यवन राज तोरमाण (हूणवंशीय) के गुरू थे और चन्द्रभागा नदी के समीप स्थित राजधानी पवैया (पंजाब) में ही रहते थे। हरिगुप्त के शिष्य देवगुप्त की भी बड़ी पद-प्रतिष्ठा थी। देवगुप्त के शिष्य शिवचन्द्र पवैया से बिहार करते हुए भिन्नमाल (श्रीमाल, गुजरात की प्राचीन राजधानी) में आए। उनके शिष्य यक्षदत्त व अनेक अन्य गुणवान शिष्यों ने गुजर देश में जैन धर्म का खूब प्रचार किया, और उसे बहुत से जैन मन्दिरों के निर्माण द्वारा अलंकृत कराया। उनके एक शिष्य वटेश्वर ने आकाश वप्र नगर में विशाल मन्दिर बनवाया। वटेश्वर के शिष्य तत्वाचार्य कुबलयमालाकार क्षत्रिय वंशी उद्योतनसूरि के गुरू थे। उद्योतन सूरि ने वीरभद्र आचार्य से सिद्धान्त की तथा हरिभद्र आचार्य से न्याय की शिक्षा पाकर शक संवत् ७०० में जावालिपुर (जालोर-राजपुताना) में वीरभद्र द्वारा बनवाए हुए ऋषभदेव के मन्दिर में अपनी कुवलयमाला पूर्ण की। तोरमाण उस हूण आक्रमणकारी मिहिरकुल का उत्तराधिकारी

था जिसकी क्रूरता इतिहास-प्रसिद्ध है। उस पर इतने शीघ्र जैन मुनियों का उक्त प्रभाव पड़ जाना जैन धर्म की तत्कालीन सजीवता और उदात्त धर्मप्रचार-सरणि का एक अच्छा प्रमाण है।

चालुक्य नरेश भीम प्रथम के समय में जैन धर्म का विशेष प्रसार हुआ। उसके मंत्री प्राग्वाट वंशी विमलशाह ने आबू पर आदिनाथ का वह जैन मन्दिर बनवाया जिसमें भारतीय स्थापत्यकला का अति उत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ है, और जिसकी सूक्ष्म चित्रकारी, बनावट की चतुराई तथा सुन्दरता जगद्विख्यात मानी गई है। यह मन्दिर ई० सन् १०३१ अर्थात् महमूद गजनी द्वारा सोमनाथ को ध्वंस्त करने के सात वर्ष के भीतर बनकर तैयार हुआ था। खरतरगच्छ पट्टावली में उल्लेख मिलता है कि विमल मंत्री ने तेरह सुलतानों के छत्रों का अपहरण किया था; चन्द्रावती नगरी की नीव डाली थी, तथा अबुदांचल पर ऋषभदेव का मन्दिर निर्माण कराया था। स्पष्टतः विमलशाह ने ये कार्य अपने राजा भीम की अनुमति से ही किए होंगे और उनके द्वारा उसने सोमनाथ तथा अन्य स्थानों पर किए गए विध्वंसों का प्रत्युत्तर दिया होगा। चालुक्यनरेश सिद्धराज और उसके उत्तराधिकारी कुमारपाल के काल में जैन धर्म का और भी अधिक बल बढ़ा। प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचंद्र के उपदेश से कुमारपाल ने स्वयं, खुलकर जैन धर्म धारण किया और गुजरात की जैन संस्थाओं को खूब समृद्ध बनाया, जिसके फलस्वरूप गुजरात प्रदेश सदा के लिए धर्मानुयायियों की संख्या एवं सस्थाओं की समृद्धि की दृष्टि से जैन धर्म का एक सुदृढ़ केन्द्र बन गया। यह महान् कार्य किसी धार्मिक कट्टरता के बल पर नहीं, किन्तु नाना-धर्मो के प्रति सद्भाव व सामंजस्य-बुद्धि द्वारा ही किया गया था। यही प्रणाली जैन धर्म का प्राण रही है, और हेमचन्द्राचार्य ने अपने उपदेशों एवं कार्यो द्वारा इसी पर अधिक बल दिया था। धर्म की अविच्छिन्न परम्परा एवं उसके अनुयायियों की समृद्धि के फलस्वरूप ई० सन् १२३० में सोम सिंहदेव के राज्यकाल में पोरवाड़ वंशी सेठ तेजपाल ने आबूपर्वत पर उक्त आदिनाथ मन्दिर के समीप ही वह नेमिनाथ मन्दिर बनवाया जो अपनी शिल्पकला में केवल उस प्रथम मन्दिर से ही तुलनीय है। १२ वीं १३ वीं शताब्दी में आबू पर और भी अनेक जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ था, जिससे उस स्थान का नाम देलवाड़ा (देवलवाड़ा) अर्थात् देवों का नगर पड़ गया। आबू के अतिरिक्त काठियाबाड़ के शत्रुंजय और गिरनार तीर्थक्षेत्रों की ओर भी अनेक नरेशों

और सेठों का ध्यान गया और परिणामतः वहां के शिखर भी अनेक सुन्दर और विशाल मन्दिरों से अलंकृत हो गए। खंभात का चिंतामणि पार्श्वनाथ मन्दिर ई० सन् ११०८ में बनवाया गया था और १२९५ में उसका जीर्णोद्वार कराया गया था। वहाँ के लेखों से पता चलता है कि वह समय समय पर मालवा, सपादलक्ष तथा चित्रकूट के अनेक धर्मानुयायियों के विपुल दानों द्वारा समृद्ध बनाया गया था।

जैन संघ में उत्तरकालीन पंथभेद—

जैन संघ में जो भेदोपभेद, सम्प्रदाय व गण गच्छादि रूप से, समय समय पर उत्पन्न हुए, उनका कुछ वर्णन ऊपर किया जा चुका है। किन्तु उनसे जैन मान्यताओं व मुनि आचार में कोई विशेष परिवर्त्तन हुए हों, ऐसा प्रतीत नहीं होता। केवल जो दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदाय भेद विक्रम की दूसरी शती के लगभग उत्पन्न हुआ, उसका मुनि-आचार पर क्रमशः गंभीर प्रभाव पड़ा। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में न केवल मुनियों द्वारा वस्त्र ग्रहण की मात्रा बढ़ी, किन्तु धीरे-धीरे तीर्थंकरों की मूर्तियों में भी कोपीन का चिन्ह प्रदर्शित किया जाने लगा। तथा मूर्तियों का आंख, अंगी, मुकुट आदि द्वारा अलंकृत किया जाना भी प्रारम्भ हो गया। इस कारण दिगम्बर और श्वेताम्बर मन्दिर व मूर्तियां, जो पहले एक ही रहा करते थे, वे अब पृथक पृथक होने लगे। ये प्रवृत्तियां सातवीं आठवीं शती से पूर्व नहीं पाई जाती। एक और प्रकार से मुनि-संघ में भेद दोनों सम्प्रदायों में उत्पन्न हुआ। जैन मुनि आदितः वर्षा ऋतु के चातुर्मास को छोड़ अन्य काल में एक स्थान पर परिमित दिनों से अधिक नहीं ठहरते थे, और वो सदा विहार किया करते थे। वे नगर में केवल आहार व धर्मोपदेश निमित्त ही आते थे, और शेषकाल वन, उपवन, में ही रहते थे। किन्तु धीरे-धीरे पांचवीं छठवीं शताब्दी के पश्चात् कुछ साधु चैत्यालयों में स्थायी रूप से निवास करने लगे। इससे श्वेताम्बर समाज में बनवासी और चैत्यवासी मुनि सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए। दिगम्बर सम्प्रदाय में भी प्रायः उसी काल से कुछ साधु चैत्यों में रहने लगे। यह प्रवृत्ति आदितः सिद्धान्त के पठन-पाठन व साहित्य-सृजन की सुविधा के लिए प्रारम्भ हुई प्रतीत होती है, किन्तु धीरे-धीरे वह एक साधु-वर्ग की स्थायी जीवन-प्रणाली बन गई, जिसके कारण नाना मन्दिरों में भट्टारकों की गद्दियां व मठ स्थापित हो गए। इस प्रकार के भट्टारकों के आचार में कुछ शैथिल्य तथा परिग्रह अनिवार्यतः आ गया। किन्तु दूसरी

और उससे एक बड़ा लाभ यह हुआ कि इन भट्टारक गद्दियों और मठों में विशाल शास्त्र भंडार स्थापित हो गए और वे विद्याभ्यास के सुदृढ़ केन्द्र बन गए । नौवीं दसवीं शताब्दी से आगे जो जैन साहित्य-सृजन हुआ, वह प्रायः इसी प्रकार के विद्या-केन्द्रों में हुआ पाया जाता है । उपयोगिता के कारण भट्टारक गद्दिया धीरे-धीरे प्रायः सभी नगरों में स्थापित हो गई, और मन्दिरों में अच्छा शास्त्र-भंडार भी रहने लगा । यहीं प्राचीन शास्त्रों की लिपियाँ प्रतिलिपियाँ होकर उनका नाना केन्द्रों में आदान-प्रदान होने लगा । यह प्रणाली ग्रंथों के यंत्रों द्वारा मुद्रण के युग प्रारम्भ होने से पूर्व तक बराबर अविच्छित्र बनी रही । जयपुर, जैसलमेर, ईडर, कारंबा, मूडबिद्री, कोल्हापुर आदि स्थानों पर इन शास्त्र भंडारों की परम्परा आज तक भी स्थिर है ।

१५ वीं, १६ वीं शती में उक्त जैन सम्प्रदायों में एक और महान् क्रान्ति उत्पन्न हुई । श्वेताम्बर सम्प्रदाय में लोकाशाह द्वारा मूर्तिपूजा विरोधी उपदेश प्रारम्भ हुआ, जिसके फलस्वरूप स्थानकवासी सम्प्रदाय की स्थापना हुई । यह सम्प्रदाय ढूंढिया नाम से भी पुकारा जाता है । इस सम्प्रदाय में मूर्तिपूजा का निषेध किया गया है । वे मन्दिर नहीं, किन्तु स्थानक में रहते हैं; और वहां मूर्ति नहीं, किन्तु आगमों की प्रतिष्ठा करते हैं । श्वेताम्बर सम्प्रदाय के ४५ आगमों में से कोई बारह-चौदह आगमों को वे इस कारण स्वीकार नहीं करते, क्योंकि उनमें मूर्तिपूजा का विधान पाया जाता है । इसी सम्प्रदाय में से १८ वीं शती में आचार्य भिक्षु द्वारा 'तेरापंथ' की स्थापना हुई । वर्तमान के इस सम्प्रदाय के नायक तुलसी गणि है[1], जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया है । दिगम्बर सम्प्रदाय में भी १६ वीं शती में तारण स्वामी द्वारा मूर्ति पूजा निषेधक पंथ की स्थापना हुई, जो तारणपंथ कहलाता है । इस पंथ के अनुयायी विशेषरूप से मध्यप्रदेश में पाए जाते हैं । इन दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदाय-भेदों का परिणाम जैन गृहस्थ समाज पर भी पड़ा, जिसके कारण जैन धर्म के अनुयायी आज इन्हीं पंथों में बँटे हुए हैं ।

1. आचार्य तुलसी महाप्रयाण के बाद वर्तमान मे उस पन्थ के नायक आचार्य महाप्रज्ञजी है ।

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

तीसरा अतिचार :

व्रत का प्रेम होता है तो व्रत को दूषित करने का काम नहीं होता है। मूलभूत बात यह है कि व्रत का प्रेम होना चाहिए । ज्यों ज्यों व्रत का प्रेम बढ़ेगा त्यों त्यों व्रतपालन अच्छा होगा । ज्यों ज्यों व्रत का प्रेम कम होता जाएगा, अतिचारों का सेवन बढ़ता जाएगा !

तीसरा अतिचार तब लगता है जब व्रतधारी ने घर से बाहर, या घर के कम्पाउन्ड से बाहर नहीं जाने की प्रतिज्ञा की होती है । वैसी प्रतिज्ञा लेकर वह घर में बैठा है, बाहर कोई मनुष्य खड़ा है, उस से बात करनी है। वह तो घर से बाहर जा नहीं सकता है ! उस को घर में बुला भी नहीं सकता हैं कि : 'लल्लुभाई, जरा घर में आईए, आप से बात करती है !' इस प्रकार बुलाने पर व्रत का भंग हो जाता है । इसलिए उस बाहर खड़े हुए मनुष्य को बुलाने के लिए छींकता है...खंखारता है...कि जिस से बाहरवाला व्यक्ति समझ जाय कि मुझे घर में बुला रहा है !'

इस प्रकार की चालाकी से अतिचार लगता है ।

चौथा अतिचार :

चौथा अतिचार भी इसी प्रकार का है । बाहर खड़े हुए मनुष्य को घर में बुलाने के लिए (स्वयं बाहर नहीं जाना है, इसलिए) वह छींकतानहीं है, ताली नहीं बजाता है, परंतु स्वयं घर के दरवाजे के पास जा कर खड़ा रहता है । जिस से वह बाहरवाला मनुष्य उसकों देख सके और वह स्वयं घर में चला आए । इस प्रकार की चालाकी करने से अतिचार लगता है ।

पांचवा अतिचार :

पांचवा अतिचार भी ३-४ अतिचार जैसा ही है । कपट-कार्य में फर्क है । अपनी मर्यादा से बाहर खड़े हुए मनुष्य को बुलाने का ढंग बदलता है। कंकड़ फेंक कर उसका ध्यान आकर्षित करता है, अथवा दूसरी कोई वस्तु फेंक कर उस व्यक्ति को अपने पास बुलाता है । 'मैं मेरी माईल की या

K.M. की मर्यादा से बाहर नहीं जा सकता, जाने से व्रतभंग होता है, मुझे व्रतभंग नहीं करना है और कार्य करना है...इसलिए दूसरा उपाय खोज कर कार्य करूं !'

प्रश्न : ऐसा करने पर, भाव से तो व्रतभंग हो जाता है न ?

महाराजश्री : हां, हो जाता है । व्यवहार से भंग नहीं होता, अतिचार लगता है । जो मनुष्य व्यवहार से भी व्रतभंग नहीं करता है, वह एकदिन भाव से व्रतपालन करने के लिए समर्थ बन सकता है । 'मेरा व्रतभंग नहीं होना चाहिए', यह है व्रतसापेक्षता । यदि व्रतसापेक्षता नहीं रहती है तो व्रतभंग हो जाता है ।

व्रतपालन में निवृत्ति का लक्ष्य चाहिए :

सही बात यह है कि व्रत ग्रहण करते समय मनुष्य का लक्ष्य निवृत्ति का होना चाहिए । प्रेम प्रवृत्ति का होता है और व्रत निवृत्ति का लेता है, इससे इस प्रकार के अतिचार लगते हैं ।

ग्रंथकार आचार्यदेव ने इसलिए प्रारंभ में ही कहा है कि जो भी व्रत लें, सोच-समझ कर लें । अपनी शक्ति का विचार कर के लें । भावावेश में बहकर व्रत नहीं लेने चाहिए ।

'मुझे मेरी सांसारिक प्रवृत्तियाँ सीमित करती हैं, अब मुझे निवृत्ति की और अग्रसर होना है,' ऐसा निर्णय आत्मसाक्षी से करना चाहिए । तभी व्रतपालन में दृढ़ता आती है । अन्यथा प्रवृत्तियों का आकर्षण व्रतों में दूषण लगाता रहता है । यहां आज बताए गए पांचों अतिचार, प्रवृत्ति के आकर्षण की वजह से ही लगते हैं, यह स्पष्ट बात है । मात्र व्रतसापेक्षता के भाव की वजह से ही बच जाता है मनुष्य, अन्यथा व्रतभंग ही हो जाय !

आचारमार्ग की अनिवार्यता : रावण की एक बात :

प्रश्न : व्रतपालन आचारमार्ग है, आचारमार्ग पर इतना ज्यादा जोर क्यों दिया जाता है ?

महाराजश्री : किसी भी धर्म की आधारशिला आचारमार्ग है । भारत के जिन-जिन धर्मों ने आचारमार्ग को गौण कर दिया, महत्व नहीं दिया, वे धर्म विलुप्त-प्रायः हो गए । वैसे, जिन मनुष्यों ने शुभश्रेष्ठ आचारमार्ग को जीवन में स्थान नहीं दिया, वे मनुष्य पापों के गहरे खड्डे में गिर गए, उनका पतन हो गया । इसीलिए विशिष्ट ज्ञानी पुरूषों ने सुंदर आचारमार्ग

प्रतिपादित किया है । शुभ-प्रशस्त आचारों का पालन करने से मनुष्य अनेक अनर्थों से, पापों से, दुराचारों से बच जाता है । मनुष्य के पास कितनी भी कलायें हो, कितना भी बल हो, धन हो, वैभव हो... परंतु यदि सम्यग् आचार नहीं हैं, तो सब कुछ व्यर्थ है ।

रावण के समय की एक बात है यह एक पुराणकथा है ।

रावण की राजसभा में एक महर्षि पधारे । रावण साधु-मुनि-महर्षिओं को मान-सम्मान देता था । जब राजसभा में महर्षि पधारे, रावण ने उनका सम्मान किया । रावण ने अपने राज्य में विविध प्रयोगशालायें स्थापित की थीं । उसने वे सारी प्रयोगशालायें महर्षि को बता दी । विज्ञानशाला, चिकित्साशाला, शस्त्रशाला, नृत्यशाला, संगीतशाला, व्यायामशाला....... वगैरह - वगैरह ।

महर्षि ने सभी शालायें देखकर बहुत प्रशंसा की । जाते समय उन्होंने रावण को कहा : 'हे लंकेश, मुझे ऐसा लगता है कि ये सारी प्रयोगशालायें शीघ्र नष्ट हो जायेंगी ।'

रावण चौंका । उसने पूछा : 'भगवंत, ऐसा क्यों ?'

महर्षि ने कहा : 'राजन्, तुमने इन सभी शालाओं की आधारभूत शाला बनायी नहीं है... ।'

रावण ने पूछा : 'भगवंत, आधारभूत शाला कौन सी है ?'

महर्षि ने कहा : 'सदाचार-शाला !'

इतना कहकर महर्षि चले गए । रावण गहरे सोच में डूब गया ।

वर्तमान की दयनीय स्थिति :

आज भी देश और दुनिया में यही स्थिति नजर आती है । कितने प्रकार की शालायें खुली हैं ! प्रयोगशाला, नृत्यशाला, रसायनशास्त्र की शाला, चिकित्साशाला... विद्यालय, महाविद्यालय, संगीतशालायें... कितने प्रकार की क्लवें खुली हैं ? यह सब कुछ होते हुए भी मनुष्य दुःखी, अशान्त और त्रस्त है । चूंकि सदाचारशाला नहीं है !

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की शिक्षा देनेवाली शालाएँ कहां हैं ? ऐसी शालाएँ नहीं होने की वजह से आज घोर हिंसा... पशुओं की और मनुष्यों की चल पड़ी हैं । कदम-कदम पर मनुष्य असत्य बोल रहा है । चोरी, अनीति, बेईमानी... बेहद बढ़ रही है । 'ब्रह्मचर्य' शब्द तो आज की युवा पीढी भूल ही गई है । दुराचार-व्यभिचार व्यापक बन गए

हैं। अपरिग्रह के प्रति प्रायः लोगों की श्रद्धा नष्ट हो गयी है । लोभ और परिग्रह के नागपाश में मनुष्य बंध गया है ।

परमार्थ और परोपकार की शिक्षा देनेवाली शालायें कहां है ? विनय और मर्यादाओं की शिक्षा कहां मिलती है ? भक्ष्य और अभक्ष्य, पेय और अपेय का बोध कराने वाली शालायें कहां हैं ? अंडे, मछली और मांसाहार का प्रचार-प्रसार कितना बढ़ रहा है ? शराब पीनेवालों की संख्या कितनी बढ़ गई है ? पानी की तरह शराब पी रहे हैं लोग ! इस से मनुष्य विनाश की ओर अग्रसर होता जा रहा है ।

व्रत-नियमों की आज अनिवार्यता है :

ऐसी स्थिति में व्रत और नियम कितने आवश्यक हैं, यह बात आप लोग समझ सकते हैं । यहां बैठे हुए कई महानुभाव इसलिए परेशान हैं, चूंकि उनके घरों में शराब की बोतलें आ गयी हैं ! उनके घरों में अंडे आने लगे हैं ! वे रोक नहीं सकते हैं । परेशान हैं ! परंतु क्या वे लोग अपनी भूल कबूल करेंगे ? कि उन्होंने संतानों को बचपन से व्रत-नियमों की महिमा बतायी नहीं । बचपन से सदाचारों की शिक्षा दी नहीं । बचपन से पापों का भय संतानों के मन में भरा नहीं... ये बातें कबूल करेंगे वे लोग ?

उपसंहार :

अब भी आप लोग सावधान होकर, व्रत-नियमों, की महिमा, सदाचारों की महिमा समझें । आपके और आपके परिवार के लोगों के जीवन में व्रतपालन हो– वैसा वातावरण पैदा करें । वातावरण बिगड़ता जा रहा है, फिर भी रोक लगा सकते हो । निराश होने की आवश्यकता नहीं है । उपाय और उपचार खोजते रहो । अवश्य वैसे उपाय मिलेंगे ।

'देशावकासिक व्रत' उन लोगों के लिए हैं, जिन्होंने बारह व्रत अंगीकार किए हैं और उनकी मनोवृत्ति निवृत्ति की ओर आकर्षित हो गई है ! व्रतपालन विशेष दृढ़ता से करने के मनोरथ उनके मन में पैदा हुये हैं ।

ऐसे लोग इस व्रत का, दोष लगाये बिना, अच्छी तरह पालन कर सकते हैं । निवृत्ति का लक्ष्य बना कर, व्रतग्रहण कर, अच्छी तरह व्रतपालन कर, आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होते रहो, यही मंगल कामना ।

पौषध व्रत :

आज जिस व्रत की बात करनी है मुझे, वह पौषध व्रत तो एक प्रकार की साधुता ही है ! पौषध व्रत करनेवाला मनुष्य २४ घंटे के लिए या १२

घंटे के लिए श्रमण-साधु बन जाता है ! साधु जैसी ही सारी दिनचर्या होती है पौषध व्रत में !

यदि मनुष्य महिने में दो-चार पौषध करता रहे तो अनेक चिंताओं से, संतापों से और उपाधियों से भरी हुई जिंदगी में कुछ 'रीलेक्स' होता है, राहत मिलती है और 'यह मनुष्य जीवन साधुता के लिए ही है,' यह आदर्श स्मृति में बना रहता है ।

ज्ञानी पुरूषों ने इसी दृष्टि से कहा है कि चतुर्दशी के दिन, अष्टमी के दिन, पंचमी के दिन पौषध किया करो । पर्वतिथियां निवृत्तिमय जीवन जीने के लिए हैं । पापमय, अशान्तिमय, क्लेशमय जीवन पर्वतिथियों में नहीं जीना है । घर और दुकान से दूर रहने का अभ्यास करना आवश्यक है । पौषध ही वह अभ्यास है । निरंतर घर और दुकान के साथ रहनेवाले लोग अशान्त और संतप्त रहते ही हैं । आप लोगों को अनुभव होगा ।

प्रश्न : ऐसा ही है ।

महाराजश्री : तो फिर पौषधव्रत के प्रति उपेक्षा क्यों ? 'पौषध' इस प्रकार की शान्ति पाने की, स्वस्थता पाने की श्रेष्ठ व्यवस्था है । संसार के सभी व्यवसायों से मुक्ति ! यह मुक्ति २४ घंटे की ले सकते हो, १२ घंटे की ले सकते हो । मुक्ति चाहिए तो मिल सकती है ।

पौषधव्रत की चार पालनायें :

– पौषधव्रत में चार बातों का पालन करने का होता है । पहली बात है तपश्चर्या की । उपवास के साथ पौषध करें तो श्रेष्ठ है, परंतु उपवास नहीं कर सकते हैं तो आयंबिल कर सकते हैं, अथवा एकासणा कर सकते हैं । आयंबिल अथवा एकासणा करने अपने घर जा सकते हैं, दूसरे के घर भी जा सकते हैं ।

– सुबह-शाम प्रतिक्रमण तो करना ही होता है । प्रतिक्रमण का समावेश चार बातों में नहीं है ।

– दूसरी बात है स्नान की । यदि आपको सुबह पौषधव्रत लेना है तो आपको स्नान नहीं करना चाहिए । और, जब स्नान नहीं करना है तो परमात्मा की द्रव्यपूजा भी नहीं करने की है । हां, यदि आपका गृहमन्दिर है, आपके सिवा दूसरा कोई गृहमन्दिर में पूजा करनेवाला नहीं है, तो आप अल्प पानी से स्नान कर, पूजा करके बाद में पौषध ले सकते हैं । तात्पर्य यह है कि पौषधव्रत में शरीर की शोभा, शरीर का श्रृंगार नहीं करना है ।

– तीसरी बात है ब्रह्मचर्य के पालन की। पौषधव्रत में तो ब्रह्मचर्य का पालन करना है, परंतु उसके पूर्व १२ घंटे का ब्रह्मचर्यपालन होना चाहिए। वैसे, दिन का १२ घंटे का पौपध किया हो, शाम को प्रतिक्रमण कर, पौपधव्रत पूर्ण कर घर पर जाय, तो उस रात में भी ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। यानी दो रात और एक दिन ब्रह्मचर्य का पालन होना चाहिए । जिस से आप पौषधव्रत में अच्छा आत्मचिंतन कर सकते हैं ।

– चौथी बात है व्यापार की । पौषधव्रत में आपको घर-दुकान की कोई भी प्रवृति नहीं करने की है । घर-दुकान संबंधी बातें भी नहीं करनेकी हैं । विचार भी वैसे नहीं करने के हैं । पैसे की लेनदेन नहीं करने की हैं । पैसे को छूने का भी नहीं है ।

प्रश्न : महिलायें तो पौषधव्रत में पैसे अपने पास रखती हैं ।

महाराजश्री : नहीं रखने चाहिए पैसे ! मानो कि किसी धर्मकार्य में पैसे देने हैं, तो पौषध में नहीं देने चाहिए । पौषध के पहले या बाद में देने चाहिए ।

प्रश्न : महिलाओं के संवत्सरी प्रतिक्रमण में, कुछ सूत्र बोलते हैं उस समय वहां पैसे रखने पड़ते हैं, उपाश्रय-धर्मशाला का 'टेक्स' भी उसी दिन देना पड़ता है, इसलिए पौषध में भी महिलाओं को पैसे अपने पास रखने पड़ते हैं ।

महाराजश्री : ऐसी प्रथायें गलत हैं । बंद कर देनी चाहिए ऐसी प्रथायें। पैसे लेनेहैं तो लो, परंतु पौषधव्रत दूषित हो उस प्रकार नहीं लेने चाहिए ।

पौषधव्रत इन चार बातों से ही महत्वपूर्ण है ।

चार महान आदर्श :

– आहार संज्ञा पर विजय पाने के लिए उपवास है ।

– देहसक्ति तोड़ने के लिए शरीरश्रृंगार वर्ज्य है ।

– मैथुनसंज्ञा पर विजय पाने के लिए ब्रह्मचर्यपालन है ।

– परिग्रहसंज्ञा पर विजय पाने के लिए अ-व्यापार है ।

सर्वसावद्य (पाप) के त्यागरूप तो है ही पौषधव्रत, परंतु इन चार बातों पर विशेष लक्ष्य देना अति आवश्यक है ।

आहारसंज्ञा से जो अनर्थ होता है उसको आप जानेंगे तो उपवास का महत्व समझ पायेंगे । आहारसंज्ञा यानी खाने-पीने की मनोवृत्ति । भूख

लगती है और खाने की इच्छा होती है यह आहारसंज्ञा नहीं है । भूख नहीं हो तब भी खाने के ही विचार मन में चलते रहें– यह आहारसंज्ञा है ।

प्रश्न : उपवास करते हैं तो खाने के विचार ज्यादा आते हैं । इसलिए उपवास के पारणे में भान नहीं रहता है !

महाराजश्री : यदि आप 'मुझे आहारसंज्ञा पर विजय पाना है,' इस दृष्टि से उपवास करेंगे तो उपवास के दिन खाने के विचार नहीं आयेंगे परंतु 'मुझे अणाहारी बनने के लिए क्या करना चाहिए', ये विचार आयेंगे । पौषधव्रत के साथ उपवास होने से, चिंतन-मनन करने का अवकाश मिलता है । आहारसंज्ञा को निर्मूल करने के उपाय सोचे जा सकते हैं ।

दूसरी बात है देहासक्ति तोड़ने की । देह की, शरीर की आसक्ति तोड़ने के लिए पहला उपाय यही है– देह को सजाना नहीं, देह के रूप को देखना नहीं, देह की ज्यादा तुष्टि-पुष्टि करना नहीं । परंतु प्रतिदिन संसार-व्यवहार में यह बात संभवित नहीं है । इसलिए 'पौषधव्रत' में शरीरका श्रृंगार नहीं करने का कहा गया है । महीने में ऐसे दो-चार पौषध कर लिए जायं...और उसमें 'शरीर और आत्मा' के भेद ज्ञान का अभ्यास किया जाय तो देहासक्ति टूट सकती है ।

'मैं आत्मा हूं, मैं शरीर नहीं हूं...' यह बात मन में गहरी उतर जानी चाहिए । यह बात हृदय में जंचे बिना, सच्ची ज्ञानदृष्टि ही खुलती नहीं है। यह बात जंचने के बाद, आत्मप्रीति बढ़नी चाहिए और देहासक्ति टूटनी चाहिए । पौषधव्रत में यह काम सरलता से हो सकता है ।

प्रश्न : आजकाल तो हम देखते हैं कि पौषधव्रत करनेवाले जब कोई क्रिया-कांड नहीं होता है तब गहरी नींद लेते हैं अथवा तो गपसप चलता है !

महाराजश्री : इसका कारण है अज्ञान ! बिना ज्ञान की क्रिया ! क्रिया करते हैं परंतु उन लोगों को ज्ञान नहीं है इसलिए वे क्रियाजड़ बन गए हैं। क्रिया भी विधिपूर्वक प्रायः नहीं करते ! फिर भी क्रिया करने का अभिमान कितना होता है ? ऐसे लोगों का अनुकरण नहीं करना है । ऐसे लोगों का अनुकरण करने से आप भी वैसे क्रियाजड़ बन जाओगे । ज्ञान के साथ क्रिया को जोड़ो ।

आप जब पौषधव्रत करें तब प्रमाद नहीं करें । विकथायें नहीं करें ।

राग-द्वेष की वृद्धि हो वैसा कुछ भी नहीं करें । आवश्यक क्रियाकलापों के अलावा, सिवाय जाप-ध्यान-स्वाध्याय, कुछ भी नहीं करना है । देहासक्ति तोड़ने का मानसिक पुरूषार्थ करना है ।

अनासक्त महात्मा राजा गुणसेन :

ऐसा पुरूषार्थ करना है कि शरीर पर कष्ट पड़ने पर भी, 'ये कष्ट मेरे पर नहीं बरस रहे हैं, शरीर पर बरस रहे हैं, मैं तो विशुद्ध आत्मा हूं ।' ऐसा चिंतन चलता रहे और मन समाधि में रहे ।

'समरादित्य केवली चरित्र' में, समरादित्य का पहला भव राजा गुणसेन का बताया है । राजा गुणसेन, आचार्यश्री विजयसेन से धर्म पाते हैं । आत्मा और शरीर का भेदज्ञान उनको होता है । राजा गुणसेन के प्रति तीव्र द्वेषभाव रखनेवाला अग्निशर्मा मरकर विद्युत्कुमार देवों में देव होता है । देव होने के बाद वह सोचता है : 'मैंने पूर्वजन्म में ऐसा कौन सा कर्म किया होगा कि जिससे मैंने यह दिव्य विभुति प्राप्त की है ?' उसने अपने ज्ञान से पूर्वजन्म देखा...और राजा गुणसेन के प्रति तीव्र द्वेष उसके मन में उभर आया ।

जिस समय देव ने गुणसेन को देखा था उस समय गुणसेन महल के एक विशुद्ध कमरे में 'कायोत्सर्ग ध्यान' में स्थिर चित्त से खड़े थे । रात्रि का समय था । देव ने उन महात्मा गुणसेन के ऊपर गर्म-गर्म धूलि की वर्षा कर दी । क्रोध से देव का मन मूढ़ हो गया था । तर्क की आग जैसी वह धूलि थी । ऐसी पांशुवृष्टि से राजा गुणसेन का शरीर जलता है । फिर भी वे अनाकुल रहे ! महान् सत्व था उन में । चूंकि जिनप्रणित धर्म से उनका मन भावित था ।

धर्म पाना, धर्मक्रिया करना...एक बात है, और धर्म से मन को भावित करना दूसरी बात है । भेदज्ञान से मन भावित होता है तभी कष्ट के समय, दुःख के समय समता-समाधि रह सकती है । सुनिये, महात्मा गुणसेन का चिंतन, जब उन पर आग बरस रही थी !

सारीर-माणसेहिं दुक्खेहि अभिद्दुयम्मि संसारे ।
सुलहमिणं जं दुक्खं दुलहा सद्धम्मपडिवत्ती ॥
धन्नोऽहं जेण मए अणोरपारम्मि भवसमुद्दम्मि ।
भव समसहस्स दुलहं लद्धं सद्धम्मरयणमिणं ॥

एयस्स पभावेण पालिज्जन्तस्स सइ पयत्तेण ।

जम्मन्तरम्मि जीवा पावन्ति न दुक्खदोगच्चं ॥
ता एसो च्चिय सफलो मज्झमणायरणदोसपरिहीणो ।
सद्धम्मलाभगरूओ जम्मो णाइम्मि संसारे ॥
विलिहइ य मज्झ हिययम्मि जो कओ तस्स अग्गि सम्मस्स ।
परिभवकोवुप्पाओ, तवइ अकज्जं कयं पच्छा ॥
एण्हिं पुण पडिवन्नो मेत्तिं सव्वेसु चेव जीवेसु ।
जिणवयणाओ अहयं विसेसओ अग्गिसम्मम्मि ॥

अब इन गाथाओं का अर्थ सुनाता हूं ।

१. शारीरिक और मानसिक दुःखों से यह संसार उपद्रवित है, ऐसे दुःखपूर्ण संसार में यह दुःख (आग जैसी रेती बरसने का दुःख) तो मामूली है ! परंतु सद्धर्म की मुझे जो प्राप्ति हुई है, वह दुर्लभ है !

२. सचमुच, मैं धन्य हूं, चूंकि इस अनन्त संसार में हजारों-लाखों भवों में जो सद्धर्म-रत्न पाना दुर्लभ है, वह सद्धर्मरत्न मुझे मिल गया है !

३. इस धर्मरत्न के प्रभाव से, इस के सुचारू पालन से, जन्मांतर में भी जीव दुःख-दुर्गति नहीं पाते हैं ।

४. मेरा तो यही जन्म सफल हो गया है । चूंकि अनाचरण-दोष से मुक्त जन्म और सद्धर्म की श्रेष्ठ प्राप्ति, मुझे इस अनादि संसार में हो गई है।

५. मेरे हृदय में बस, यही बात चुभती है– मैंने उस अग्निशर्मा का घोर पराभव किया और इस से उस में प्रचंड क्रोध पैदा हुआ । अकार्य करने के बाद मुझे घोर पश्चात्ताप हो रहा है ।

६. अब तो मैंने सभी जीवों के प्रति मैत्रीभाव धारण किया है । जिनवचन से प्रेरित हो, विशेष कर अग्निशर्मा के प्रति मेरा मैत्रीभाव है । उसके प्रति तनिक भी वैरभाव नहीं है ।

पौषधव्रत जैसे ही 'प्रतिमा-व्रत' में रहे हुए महात्मा गुणसेन राजा का यह गंभीर चिंतन, मात्र सुनने से काम नहीं बनेगा । इस चिंतन पर हमें गहरा मंथन करना होगा । एक बात याद रखना कि महात्मा गुणसेन ने ऐसा चिंतन कैसे संयोगों में, कैसी परिस्थिति में किया था ! जिस समय उन पर आग बरस रही थी, शरीर जल रहा था...उस समय उन्होंने यह चिंतन किया था । इस प्रकार का चिंतन भेदज्ञानी-अनासक्त योगी ही कर सकता

है । आत्मा और शरीर का भेद जिसने जान लिया हो, मान लिया हो और शरीर के प्रति जो अनासक्त बन गया हो, वही ज्ञानी पुरूष, ऐसी उपद्रवग्रस्त परिस्थिति में शान्त चित्त से जिनवचनरूप चिंतन कर, समभाव धारण कर सकता है ।

संसार दुःखमय :

'यह संसार शारीरिक और मानसिक दुखों से भरापूरा है ।' यह उनका प्राथमिक विचार है । यानी संसार में दुःख स्वाभाविक है । 'अरे, मुझे दुःख क्यों आया ? क्यों मेरे पर आग बरसती है ?' ऐसा प्रश्न नहीं उठा उनके मन में । यह आग बरसने का दुःख तो मामूली है...सुलभ है... । नर्क के और तिर्यंचगति के दुःखों की तुलना में यह दुःख नगण्य है ।

जीवन में कोई भी दुःख आए, उस समय बड़े दुःखों के साथ उस दुःख की तुलना कर लो । वर्तमान दुःख तुच्छ और नगण्य लगेगा । नरक गति के और तिर्यंचगति के दुःखों का ज्ञान कर लेना चाहिए । मनुष्यगति के भी भयानक रोग, भीषण दरिद्रता, घोर अपमान-तिरस्कार आदि दुःखों की कल्पना जीवंत रखनी चाहिए । इस से तन-मन के सामान्य दुःख सहन करने की शक्ति बढ़ेगी ।

धर्मप्राप्ति दुर्लभ :

दूसरा विचार उन्होंने धर्मप्राप्ति की दुर्लभता का किया । राजा गुणसेन को आचार्यश्री विजयसेन का परिचय हुआ था और उनसे धर्म की प्राप्ति हुई थी । गुरू का परिचय और धर्म की प्राप्ति-दोनों बातें राजा को दुर्लभ... मूल्यवान् लगी थी । इसलिए, उपसर्ग के समय, संकट के समय वह दुर्लभ तत्त्व को छोड़ना नहीं चाहते थे । नहीं छोड़ा उन्होंने अपना व्रत । 'आग बरसनी हो उतनी बरसे, मैं यहां से हिलनेवाला नहीं हूं, व्रत का त्याग करनेवाला नहीं हूं ।'

धर्म को श्रेष्ठ दुर्लभ तत्त्व मान लिया जाय, प्राणों से भी ज्यादा दुर्लभ माना जाय, तो संकट के समय धर्म का त्याग नहीं करोगे ! जो वस्तु बहुत कम लोगों को मिलती हो, वह वस्तु दुर्लभ मानी जाती है । धर्म बहुत कम लोगों को मिलता है, इसलिए वह दुर्लभ है । याद रखें कि धर्म ही सभी सुखों का मूल है । मूल सलामत रहेगा तो वृक्ष पुनः भी पैदा हो सकता है । राजर्षि गुणसेन का चिंतन कितना यथार्थ है !

धर्म का प्रभाव :

राजा धर्म के प्रभाव का चिंतन करते हैं। 'यदि प्रयत्न के साथ धर्म का सुचारू पालन किया जाय तो जन्मान्तर में जीव दुःख नहीं पाता है, दुर्गति में नहीं जाता है।'

जीवन जीते आनेवाले जन्मों का विचार भी करना चाहिए। यह जीवन तो 'चार दिनों की चांदनी' जैसा है। मृत्यु के बाद मेरा जन्म किस गति में होगा ? मेरी दुर्गति नहीं होनी चाहिए। जहां भी मेरा जन्म हो वहां दुःख और अशान्ति न हो। यह बात धर्म की आराधना से ही संभव हो सकती है। जो इस जन्म में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, सदाचार और अपरिग्रह-धर्म का पालन करता है, दान-शील-तप और भावधर्म का पालन करता है, मैत्री-प्रमोद-करूणा और अच्छी भावनाओं को हृदयस्थ करता है, उसकी सद्गति ही होती है। वह दुर्गति में नहीं जाता है।'

राजा गुणसेन का यह निर्णय था। धर्म के प्रभाव को उन्होंने अच्छी तरह समझा था। इसलिए उन्होंने धोर संकट में भी धर्मभावना का चिंतन किया।

मनुष्यजन्म की सफलता :

राजा गुणसेन को अपना जन्म सफल लगता है। सफलता के दो कारण उन्होंने सोचे हैं। 'मेरे जीवन में अनाचारों का, दुराचारों का मैंने सेवन नहीं किया है और मुझे सद्धर्म की प्राप्ति हो गई है !'

कितनी अच्छी बात बतायी है उन राजर्षि ने ? जीवन की सफलता के दो असाधारण हेतु हैं ये। अनाचारों का सेवन नहीं होना और सद्धर्म की प्राप्ति एवं पालन होना।

प्रश्न : सद्धर्म की प्राप्ति तो हो गई है, परंतु अनाचारों का सेवन करते रहते हैं...तो हमारा जीवन निष्फल जायेगा न ?

महाराजश्री : अनाचारों का त्याग करने का सत्व होना आवश्यक है। अनाचार-सेवन से जो सुख प्राप्त होता है, वह सुख हेय है और तुच्छ है, यह बात मन को समझाइये। अनाचार-सेवन दुर्गति में ले जा सकता है। हां, एक रास्ता है बचने का ! अनाचारों का सेवन करने का दुःख हृदय में हो कि– 'मैं कितना निसत्व और कायर हूं, कि मैं इन अनाचारों का, दुराचारों का त्याग नहीं कर सकता हूं ? इन पापों का सेवन मुझे नहीं करना चाहिए...।'

पापों का सेवन करने के बाद खुशी नहीं मनानी चाहिए । पश्चात्ताप होना चाहिए । तो दुर्गति से बच सकते हो ।

अग्निशर्मा से मैत्रीभाव :

राजा गुणसेन अंत में अग्निशर्मा को याद करते हैं । तीन-तीन बार अग्निशर्मा को मासखमण का पारणा करने निमंत्रित किया, परंतु वह पारणा नहीं करा पाया था । इससे अग्निशर्मा ने आजीवन अनशन कर दिया था । राजा गुणसेन के प्रति धोर वैरभाव बांध लिया था... इस से राजा गुणसेन का हृदय अति व्यथित था । 'वह मेरे प्रति कोई भी भाव रखे, मैं उसके प्रति विशेष रूप से मैत्रीभाव रखता हूं । हालांकि सभी जीवों के प्रति मेरे हृदय में मैत्रीभाव ही है । मैं जिनवचनों के प्रति कृतज्ञ हूं । जिनवचन ही मेरी शरण है... ।'

शुभ भाव से सद्गति :

राजर्षि गुणसेन इस प्रकार की शुभ विचारधारा में बहते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है । शरीर का पिंजरा पड़ा रहता है और हंस उड़ जाता है । पहले देवलोक में देव बनती है गुणसेन की आत्मा ।

मृत्यु के समय शुभ विचारधारा बहती रहे तो सद्गति निश्चित है । परंतु जीवन में शुभ विचारधारा का अभ्यास किया हो, तभी संभव होती है मृत्यु के समय शुभ विचारधारा । अथवा जीवन में कभी शुभ भावों में बहते हुए देवगति का आयुष्यकर्म बांध लिया हो तो मृत्यु के समय शुभ विचार आयेंगे ही ।

एक बात निश्चित है कि मृत्यु के समय शुभ-पवित्र विचार रहेंगे तो सद्गति होगी और अशुभ विचार रहेंगे तो दुर्गति होगी । पौषधव्रत में निरंतर शुभ विचारधारा बहती रहनी चाहिए । कोई अतिचार-दोष नहीं लगे, इसलिए पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिए ।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

बाल्य-तेज

समय के प्रवाह के साथ भविष्य के पटल भी वर्तमान काल में आकृष्ट हो जाते हैं, और इसी कारण पृथ्वीपर अनेक प्रकार की घटनाएँ-घटित हो जाती हैं। इसी नियमानुसार मध्यवर्तीकाल सुख-शान्ति में व्यतीत हो गया। जो बातें आज या कल नई कहलाती थीं वे सब पुरानी हो गई। जैसे-जैसे समय बीतने लगा, कुमार सम्प्रति भी वड़ा होने लगा। बाल्यावस्था से ही वह सबका लाड़-प्यार पा रहा था और उसी समय से उसमें तेजस्विता और पराक्रम आदि के चिह्न प्रकट होने लगे थे। जब महाराजा अपने मन्त्रियों के साथ निजीराजकाज सम्बन्धी बातें करते रहते, तब भी बालक सम्प्रति वहाँ आकर उनकी गोद में बैठ जाता और मन्त्रियों को आज्ञा देता कि– "खड़े हो जाओ ! जब महाराजा पधारें, तब तुम्हें खड़े होकर उनके प्रति संम्मान प्रकट करना चाहिए ! मैं तुम्हारा महाराज हूँ।" उसके इस बाल-भाषामय विनोद को सुनकर सब हँस पड़ते थे।

कभी-कभी राज-काज की बातें चलती रहने के समय जब सम्प्रति यह सुनता कि मेरे पितामह का 'सार्व भौम राज्य है, तब अनायास ही उसे महान् दुःख होता और वह उदास हो जाता ! वह चिढ़ता हुआ-सा प्रतीत होता। जब उससे पूछा जाता कि – "राजकुमार ! इतने बड़े राज्य के उत्तराधिकारी होते हुए भी आप उदास क्यों दिखाई देते हैं ? तब सम्प्रति अपने दादाजी को यही उत्तर देता कि– "दादाजी ! आप सब कुछ जीतकर बैठ गए, और मेरे लिए जीतने को कुछ भी नहीं रहने दिया ? इसीलिए मुझे खेद होता है !" उसके इन बाल-वचनों को सुनकर महाराज और मन्त्रीगण मन-ही-मन प्रसन्न होते।

इसप्रकार बाल्यावस्था में अनेक प्रकार के खेल और उपद्रव करते हुए सम्प्रति अपना समय व्यतीत कर रहा था। तिष्यरक्षिता भी अब धीर-गम्भीर हो चली थी। वह वृद्धावस्था को अपने पापों का प्रायश्चित्त समझकर चुप-चाप सहन किए जा रही थी। अब उसके लिए महेन्द्र राजा बने या

सम्प्रति ! दोनों ही बातें समान थीं । जिस कुणाल के विरूद्ध उसने भारी तूफान खड़ा किया था, आज वह नाम शेष हो गया था । अब तो सम्प्रति ही उसकी आशाका केन्द्र हो रहा था । उसे देख कर ही वह शान्ति अनुभव करती थी ।

चन्दा के प्रयत्न से सुनन्दा ने कुणाल के अन्धे होने का कारण खोज निकाला था, और उससे वह सदैव दुःखित ही रहती थी, किन्तु आज वृद्धावस्था में उसे भी सुख का समय प्राप्त हुआ था । यद्यपि कुणाल तो राज्य प्राप्त न कर सका, किन्तु उसी के पुत्र सम्प्रति को राज्य प्राप्त हुआ देखकर उसका हृदय बाँसों उछल रहा था । जिस आशा पर आधार रखकर उसने दिन बिताये थे, वही आज सफल हो रही थी । वह सम्प्रति की अत्यन्त सावधानी के साथ देख-रेख रखती थी । यद्यपि तिष्यरक्षिता की अवस्था में बहुत कुछ सुधार हो चुका था, फिर भी सुनन्दा को उसपर विश्वास नहीं होता था, क्यों कि मनुष्य का विषैला स्वभाव भले ही शान्त हो जाय, किन्तु कोई निमित्त पाकर वह फिर सतेज हो सकता है । इसीलिए सम्प्रति को वह क्षणभर भी अकेला नहीं छोड़ती थी ! शरदकुमारी, चन्दा या सुनन्दा तीनों में से कोई एक तो अवश्य उसके साथ बनी ही रहती थी ! वह जब अपने पितामह सम्राट अशोक के पास होता तब भी चन्दा या और कोई उसके साथ रहता ही था । दादाजी को भी सौतेली माता के भय की चिन्ता विशेष ही रहती थी । इसीलिए उन्होंने भी उसकी देख-रेख के लिए विशेष प्रबन्ध किया था । इसी स्थिति में जल-प्रवाह की तरह कितने ही वर्ष बीत गए । इस अवधि में एक मुख्य घटना यह घटित हुई कि अशोक ने नन्दन जैसे धूर्त साधु का दुष्कृत्य जान लिया और इसी प्रकार की और भी कई बातें हो गई, जिनके कारण उसकी इस धर्म पर से श्रद्धा उठ गई । इसके बाद राजा अशोक आचार्य सुहस्तिस्वामी के समागम में आया, और उनके उपदेश से उसे जैन धर्म के प्रति आस्था होने लगी । अपने जैन धर्म के स्मरणार्थ उसने गान्धार देश में एक शिलालेख निर्माण करवाया, उसमें श्रीपार्श्वनाथ भगवान का नाम आता है । इसके अतिरिक्त तक्षशिला में अशोक ने एक शिलालेख खुदवाया, उसमें भी भगवान पार्श्वनाथ का नामोल्लेख आता है । इसप्रकार जैन तत्त्व के मनन चिंन्तन में उसके अस्थि मांस रंग गए और वह अपना समय सुख शान्ति में बिताने लगा ।

ब्रह्मचारिणी चन्दा भी अपने लिए योग्य पतिको प्राप्तकर सुखपूर्वक दिन बिता रही थी। वर्षों के व्यतीत हो जानेपर अब सम्प्रति नव युवावस्था को प्राप्त हो चुका था। अतएव महाराजा अशोक ने अनेक बड़े-बड़े राज़ाओं की कन्याओं के साथ उसका विवाह करवा दिया था।

इसके साथ ही वह सम्प्रति कुमार से बदलकर अब सम्राट सम्प्रति बन गया और उसने समस्त शासन राज्य अपने हाथ में ले लिए। इस प्रकार राज्यकी पूर्ण व्यवस्था करके वह स्वयं अपनी सेना-सहित नव युवावस्था के उत्साह में दिग्विजय के लिए निकल पड़ा। सबसे पहले वह कौशल प्रदेश में गया और वहाँ के राजा की भेट-पूजा स्वीकार कर काशी प्रदेश में पहुँचा। वहाँ से वह विदेह देश की मिथिला नगरी के राजा का नजराना-भेंट स्वीकृत कर भद्रदेश में गया। इसके बाद वह मालवा में आया। वहाँ से गुजरात, सौराष्ट्र, सिंध आदि में अपनी सत्ता घोषित करता हुआ अनेक छोटे-मोटे राजाओं के आमन्त्रण एवं भेट स्वीकार करने के पश्चात 'सप्रसिन्धव' पञ्जाब-पाञ्चाल देश की ओर मुड़ा।

स्वर्ग-तुल्य काश्मीर देश का अनुभव करता हुआ वह ठेठ हिमालय की तलहटी तक जा पहुँचा। उधर से लौटते हुए अटक होकर अफगानिस्तानकी ओर बढ़ गया। वहाँ से ईरान, मिस्रदेश होता हुआ आगे बढ़ गया। बीच में जो जो राजा मस्तक नवाकर भेंट अर्पण करते उनकी सेवा स्वीकार करता और ऐसा न होने पर युद्धभूमि में अपना चमत्कार बताकर उसे अपने आधीन बना लेता था।

उस उदीयमान सूर्य की किरणें समस्त एशिया खण्ड में व्याप्त हो गई। इसके बाद उसने ग्रीस आदि अन्य देशों को अधिकार में किया। इस प्रकार संसार के कोने-कोने में उसका नाम व्याप्त हो गया। क्रमशः उसने पारस, शक, यवन, पठान, सिन्ध, ग्रीस आदि सभी विदेशी सत्ताओं पर विजय प्राप्त कर ली और उन सबको अपना 'कर-द' राज्य बना लिया।

सारांश, भारत से बाहर के सभी अनार्य देशों को अपनी सत्ता के आधीन बनाकर सम्प्रति भारत लौट आया। यहाँ आकर उसने उन देशों की ओर प्रयाण किया, जिस ओर वह पहले नहीं गया था। वह बाल्हिक और गान्धार देश में होकर (ये देश हिन्दुकुश और सुलेमान पर्वत के बीच में बसे हुए हैं) आगे बढ़ता और अपनी सत्ता स्थापित करता हुआ पुनः

दशाण देश में जा पहुँचा । गङ्गा-यमुना की तराई से नीचे का प्रदेश ही दशार्ण कहलाता है । वहाँ से सतलज और यमुना के मध्यवर्ती ब्रह्मावर्त प्रदेश में अपनी हुकूमत कायम कर कुरुदेश में पहुंचा जहाँ कि चर्मण्यवती नदी से उत्तर में मत्स्यदेश और शौरसेन राज्य का शासन प्रचलित था । वहाँ से यमुना पार करके गंगा-यमुना के मध्यवर्ती अन्तर्वेद में गया । इन समस्त देशों की ओर से भेट-पूजा स्वीकार करता हुआ उत्तरवायव्य के कुरू-पाञ्चाल देश में पहुँचा । इस प्रकार सर्वत्र वह नवीन सम्राट अपनी दुहाई फेरता हुआ मगध की ओर वापस लौटा । वहाँ से फिर अङ्ग-बङ्ग और गौड़देश की हवा खाता हुआ प्रागज्योतिष्य और कामरूप प्रदेश में गया ।

वहाँ से पुण्ड्रदेश, उत्कल और वत्स एवं चेदि देश में अपनी सार्वभौम सत्ता प्रस्थापित कर सम्प्रति संसार के कोने-कोने में घूम आया ।

भारत के लगभग सभी राजा सम्राट अशोक के सामन्त थे । अतएव यहाँ के तो सभी देशों ने उस नए सम्राट की सत्ता स्वीकार कर के उसकी सेवा में यथोचित भेट-पूजा अर्पण करने के साथ-साथ कई एकने तो अपनी राज कुमारियाँ भी ब्याह दी थीं, किन्तु भारत से बाहर के देश महाराज अशोक के शासन में नहीं थे । उन देश के राजाओं के साथ सम्राट सम्प्रति ने बारम्बार युद्ध कर के उनको भी अपनी तलवार के अधीन बना दिया था।

पूर्वकालीन अजातशत्रुकी तरह इसने भी तीनों खण्ड की भूमिपर आधिपत्य स्थापित कर लिया । कोणिक-अजातशत्रु ने जिस प्रकार तीनों खण्ड के राजाओं को जीतकर अपने अधीन बना लिया था, उसी प्रकार सम्पति ने भी तीनों खण्ड के सोलह हजार राजाओं को अपना सामन्त बना लिया था । इस प्रकार समस्त पृथ्वी को अपने पराक्रम द्वारा स्वायत्त करके सम्राट सम्प्रति अजातशत्रु के समान वैताढय पर्वत तक जा पहुँचा । अर्थात् अखिल भूमण्डलपर विजय प्राप्तकर महान् सम्प्रति जब वैताढय से वापस लौटा, तब उसकी ऋद्धि-समृद्धि का पार नहीं था । वासुदेव के समान ऋद्धि उसने प्राप्त कर ली थी, किन्तु वह वासुदेव नहीं था । आधे भारत के सोलह हजार (किसी ने आठ हज़ार भी कहे हैं) राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकार की । किसी ने राज्य छिन जाने के भय से तो किसी ने भक्ति या अन्य किसी कारण से, उसकी सेवा स्वीकार कर ली थी ।

विश्वविजयी महान् सम्प्रतिकी युद्ध-सामग्री में पचास हजार हाथी, एक करोड़ घोड़े, सात करोड़ सैनिक-सेवक, नौ करोड़ रथ के रूप में विशाल सेना ही शत्रुओं के हृदय दहला देती थी।

इनके अतिरिक्त सुवर्ण-रौप्य, हीरे, माणिक, मोती, पन्ना, नीलम आदि रत्नों का तो पार ही न था। फिर भला उनकी गणना तो की ही कैसे जा सकती है ?

इस प्रकार अपार सम्पत्ति एवं असंख्य सैन्यबल के कारण सम्प्रति उस युग में एक अद्वितीय वीरपुरूष के रूप में प्रसिद्ध हो गया। जहाँ-जहाँ उसकी सेना का पड़ाव पड़ता था वहीं एक विशाल नगरका सा दृश्य दिखाई देने लगता था। फिर भी सेना और उसके साधन इतने विशाल थे कि उसके लिए सम्प्रति को अन्य प्रकार की व्यवस्था करने की आवश्यकता हो जाती थी।

विश्वविजयी कहिए अथवा देश दिग्विजयी, किन्तु इस महान् सम्प्रति के पश्चात् आजतक किसी भी नरपति ने वैताढय पर्वत पर्यन्त तीनों खण्ड पृथ्वीपर विजय प्राप्तकर आठ हजार राजाओं से अपनी आधीनता स्वीकार नहीं करवाई थी। इस पृथ्वीपर चिरकाल पर्यन्त अन्तिम चक्रवर्ती के रूप में केवल महान् सम्प्रति ही सत्ताधारी बना रहा।

क्रमशः

पुस्तक समीक्षा

Diet for A New America

शाकाहार का प्रचार-प्रसार करने के लिए अमेरिका में एक नई पुस्तक, अमेरिका के आहार पर लिखी है- Diet for A New America इसके लेखक जॉन रॉविन्स हैं । इस पुस्तक की लोकप्रियता इसी से लगाई जा सकती है कि अब तक इस पुस्तक की चार लाख पचास हजार से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं । पुस्तक पर खास खास टिप्पणियां छापी हैं, उनकी प्रति संलग्न है । यह पुस्तक अपने आप में अद्वितीय है, चूंकि इसे पढ़कर न जाने कितने लाख व्यक्ति मॉस, अण्डें और मछलियों का सेवन छोड़कर शाकाहारी बन गए ।

इस पुस्तक में कहानी के रूप में बड़े रोचक ढंग से बताया गया है कि किस प्रकार पशु एवं मछलियां मानव की सेवा करती हैं और बदले में मानव उन पर न केवल क्रूरता करता है बल्कि उन्हें मारकर उनका मॉस भी खाता है । पुस्तक में करीब चार सौ पृष्ठ हैं और इसकी प्रस्तावना भारत के डॉ. एस. जेड कासिम ने लिखी है ।

डॉक्टर एस. जेड. कासिम जो पहले योजना आयोग के सदस्य थे, उन्होंने अपनी प्रस्तावना में लिखा है कि उन्होंने इस पुस्तक को ३६ घंण्टे में पढ़ लिया और एक दिन तो अपने कार्यालय में काम नहीं कर सकें और इस पुस्तक को अधिकतर पढ़ते रहे, इससे यह तो स्पष्ट है कि यह पुस्तक उपन्यास की भाँति रोचक है और जब कोई इस पुस्तक को पढ़ना प्रारम्भ करता है तो शायद पूरी कर के ही इसे छोड़ता है ।

अमेरिका में इस पुस्तक का दाम १४ डालर अर्थात रू. ५५० औरर मंगाने का खर्च अलग । शाकाहार से जुड़े कार्यकर्ताओं के लिए कुछ अपनी ओर से लगाकर रू. ४९० में ही दे रहा हूँ बाकि का हमारी संस्था वहन कर रही है । पुस्तक की अग्रिम राशि Vegetarian Society of Delhi के नाम ड्रफ्ट भेजकर मंगा सकते हैं, जिसमें डाक खर्च भी शामिल है ।

305 Bakshi House

स्वस्थ पोषण हेतु
लक्ष्मी नारायण मोदी
मानव सचिव
Vegetarian Society of Delhi

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English

1.	*Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges – *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]	Price : Rs.	100.00
3.	P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00

Hindi

5.	Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani	40.00
6.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä	20.00
7.	Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani	30.00
8.	Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani	50.00
9.	Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír	60.00
10.	Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät	45.00
11.	Ganesh Lalwani – Pañcadaśí	100.00
12.	Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më	30.00

Bengali

13.	Ganesh Lalwani – Atimukta	40.00
14.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä	20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha – Bhagavän Mahävír O Jaina Dharma	15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक) के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable, Quaterly research Journal on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये

वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office

2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office

28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph : (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph : (033) 230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph : 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph : 2264943, 292194, Fax : (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph : (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph : (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।
Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.
(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)
'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa

S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)

Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)

High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore

H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 10

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

January 1999

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों
के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा
के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225